Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal (AMIERJ)
A Peer Reviewed Multidisciplinary Journal UGC Approved Journal No 48178, 48818
Impact Factor 5.18 ISSN 2278-5655

यशवंतराव चव्हाण जी के नाटक संबंधी विचार

प्रा. सुचिता संतोष भोसले
कला, वाणिज्य व विज्ञान महिला महाविद्यालय,
कसबा–बीड, तहसील–करवीर, जिला–कोल्हापुर।

बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी यशवंतराव चव्हाण का जन्म सातारा जिले के कराड में हुआ। कृष्णा नदी के प्राकृतिक सौंदर्य के बीच उनके बचपन के सुहावने दिन बीत गए। उनपर बचपन से ही साहित्य, कला, संगीत और संस्कृति के संस्कार हो गए। कोल्हापुर के राजाराम कॉलेज में पढ़ाई के दौरान उनकी मुलाकात ना. सी. फडके जैसे साहित्यिक प्राध्यापक के साथ हो गई। उनका प्रभाव भी उनपर हुआ। यशवंतराव जी को जब भी खाली समय मिलता तब वे अनेक प्रकार की पुस्तकें पढ़ते थे और उसपर चिंतन करते थे।

उनका नाटक के प्रति लगाव बहुत था। मराठी नाटककार बाल कोल्हटकर के सभी उन्होंने देखे थे। वे महाराष्ट्र राज्य के मुख्यमंत्री होने के कारण देश–विदेश के दौरे पर जाते ते वे वहाँ के ऐतिहासिक स्थलों को, नाट्यगृहों को, ग्रंथालयों को अवश्य देखने के लिए जाते थे। यशवंतराव जी को केवल नाटक देखने में ही रुचि नहीं थी बल्कि रंगमंच पर नाटक में हिस्सा लेने की भी इच्छा रहती थी लेकिन उन्हें उनकी राजनीतिक गतिविधियों की व्यस्तता के कारण यह संभव नहीं हुआ। लेकिन उनकी नाटक की रुचि अंत तक बनी रही। दिल्ली में हुए 43 वें अखिल भारतीय नाट्य सम्मेलन में स्वागताध्यक्ष के रूप में नाट्य–प्रेमियों को संबोधित किया था। साथही साथ नांदेड में हुए अखिल भारतीय मराठी नाट्य परिषद के 47 वे अधिवेशन के उद्घाटक के रूप में भी उन्होंने नाटक के बारे में विचार व्यक्त किए थे। इसके अलावा उनके 'ऋणानुबंध' नामक ग्रंथ में 'नाट्याचार्य खाडिलकर' इस लेख में खाडिलकर के बारे में विचार व्यक्त किए है। इसके सिवाय उन्होंने अनेक जगहों पर साहित्य सम्मेलनों साहित्य के बारे में अपने विचार व्यक्त किए है। इनमें से अधिकतर विचार नाट्य साहित्य के लिए होते थे। उनके नाटक के बारे में विचार एक समीक्षक के रूप में नही तो एक नाट्य चिंतक के रूप में दिखाई देते हैं।

यशवंतराव जी ने जिन नाटकों को पढ़ा या देखा उसके अनुसार उन्होंने अपने खुद के नाट्य विषयक मत प्रकट किए हैं। उन्होंने दिल्ली में हुए अखिल भारतीय 43 वें मराठी नाट्य सम्मेलन में नाटक इस विधा का साहित्यिक स्वरूप, उसके प्रकार तथा, विशेषताएँ, उसके अनेक घटक, साथही मराठी रंचमंच का इतिहास आदि के बारे में अपने विचार व्यक्त किए। उन्होंने अपने मंतव्य के प्रारंभ में में ही 'भारत जैसे देश की राजधानी में मराठी नाट्य सम्मेलन हो रहा है इसके प्रति गर्व महसूस हो रहा है' इसप्रकार का मंतव्य व्यक्त किया था। सन 1954 में दिल्ली में हुए अखिल भारतीय नाट्य महोत्सव में मराठी नाटक 'भाऊबंदकी' को प्रथम क्रमांक मिल गया। साथ ही 'शारदा' नाटक का दिल्लीवासियों को बहुत भा गया। उन्होंने उसकी बहुत सराहना की। कालिदास के 'अभिज्ञान शाकुंतल' इस संस्कृत नाटक का प्रयोग मराठी कलाकारों ने दिल्ली में करना यह बात यशवंतराव जी को मराठी नाट्य कला की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण लगी।

'श्रीपाद कृष्ण कोल्हटकर और कृष्णाजी प्रभावकर खाडिलकर इन्होंने मराठी रंगमंच पर राज किया' इसप्रकार के विचार यशवंतराव जी ने व्यक्त किए। वे कोल्हटकर के बारे में कहते है कि उनके नाटक में हास्य रस के फुवारें और संगीत का नए ढंग से प्रयोग से सामाजिक समस्या को उजागर किया। यशवंतराव जी ने अपने 'ऋणानुबंध' व्यक्तिचित्रात्मक किताब में 'नाट्यचार्य खाडिलकर' लेख में खाडिलकर के विषय में विस्तार से अपने विचार व्यक्त किए है। वे कहते है कि उनके नाटकों में शृंगार और करुण रस का चित्रण हुआ है। अनेक नाटकों में शृंगार यह वीरों का है तो करुणा युद्ध की पृष्ठभूमि पर दिखाई देती है। खाडिलकर जी ने 'स्वयंवर', 'भाऊबंदकी' और 'सवाई माधवराव यांचा मृत्यु' इसतरह के नाटक लिखे हैं।

यशवंतराव जी का मानना है कि मराठी रंगमंच में राम गणेश गडकरी जी का योगदान महत्त्वपूर्ण है। गडकरी के बारे में बारे में वे कहते हैं कि मराठी रंगमंच का वे तेजोमय तारा है। उनके नाटक 'एकच प्याला', 'भावबंधन' आदि तीखे परंतु भावपूर्ण नाटकों ने मोहित किया। आचार्य अत्रे जी ने गंभीर और प्रहसनात्मक नाटकों का सृजन कर नाटक के क्षेत्र में खुद की अलग पहचान बनाई। वे कहते है कि इतनाही नहीं मराठी नाटक के सामने अंतर्गत समस्या तथा चित्रपट का आगमन और आर्थिक समस्या निर्माण होने के बावजूद मराठी रंगमंच को अपने प्रयास से जीवन प्रदान करने वाले साहित्यकारों में आचार्य अत्रे का नाम विशेष महत्त्वपूर्ण है।

व्यंग्य (विडंबना) और अतिशयोक्ति पर आधारित हास्यात्मकता अत्रे जी के नाटकों की विशेषता है। साथही यशवंतराव जी उनके 'घराबाहेर', 'उद्याचा संसार' आदि गंभीर नाटकों की वे प्रशंसा करते हैं। पु.ल. देशपांडे, बाळ कोल्हटकर, श्री. मराठे, विद्याधर गोखले, पुरुषोत्तम दारव्हेकर आदि लोकप्रियता हासिल करनेवाले नाटकों के कारण मराठी नाट्यभूमि का नयापन दिखाई देता है इसप्रकार का मत यशवंतराव जी ने अपने भाषण में व्यक्त किए है। बाद में विष्णु अमृत भावे जी ने कर्नाटक राज्य के नाटकों का अनुकरण कर आधुनिक मराठी रंगमंच की नींव रखी तो किर्लोस्कर जी ने इसके लिए संस्कृत नाट्य तंत्र का आधार लिया; तो कोल्हटकर जी पारसी रागदरबारी का नाटक सूर में संगीत, अद्भूत कथानक और हास्यात्मक सहोदय कथा आदि के कारण मराठी नाटक का स्वरूप बदल दिया। केशवराव भोसले, बाल गंधर्व आदि ने शुरू की नाट्य संगीत की परंपरा को किर्लोस्कर, खाडिलकर, देवल आदि ने आगे बढ़ाई। खाडिलकर जी के 'स्वयंवर' और 'मानापमान' नाटकों में नाट्य–संगीत अभूतपूर्व है। वे आज भी श्रोताओं को रिझाते है। इसतरह मराठी नाट्य लेखन की परंपरा और इस संदर्भ यशवंतराव जी की नाट्य के प्रति गहरे और सूक्ष्म ज्ञान दिखाई देता है।

यशवंतराव जी जब 1960 में संयुक्त महाराष्ट्र राज्य के पहले मुख्यमंत्री बनते तब उन्होंने बहुत ही कम समय में राज्य के अनेक क्षेत्रों में जो कार्य किया उसकी साक्ष दिल्ली के नाट्य सम्मेलन में दिए भाषण में दिखाई देती है। उन्होंने अपने मंतव्य में बताया कि महाराष्ट्र सरकार मराठी नाटक के विकास के लिए प्रयास कर रही है। साथही साथ इसके लिए नए उपक्रम भी जारी कर रही है। इन योजनाओं में वृद्ध कलाकरों को मदद, नए कलाकारों को अवसर मिले इसके लिए नाट्य स्पर्धा, नाट्य मंडलियों को आर्थिक कमी न हो इसके लिए छोटे–छोटे गाँव में नाट्य प्रयोग प्रस्तुति, नाट्यगृह का निर्माण ऐसी विविध योजनाओं के बारे में बताया।

यशवंतराव चव्हाण जी के इन भाषणों से स्पष्ट होता है कि उनका मराठी नाट्य रंगमंच के संदर्भ में कितना लगाव और गहरा अध्ययन था। साथही साथ मराठी रंगमंच की व्यावहारिकता के संदर्भ में उन्हें कितना ज्ञान था यह भी स्पष्ट होता है।

इसतरह यशवंतराव चव्हाण केवल नाटक पढ़ना, देखना, उसका आस्वाद लेना, उसकी समीक्षा करना इतनाही मराठभ नाटक या रंचमंच का विचार नहीं करते तो रंगमंच और नाटक के अनेक व्यवहार तथा व्यावसायिक दृष्टि से भी विचार करते हैं। मराठी नाटक समृद्ध बनाने के

लिए मराठी नाट्य परिषद ने कौन–से कार्य करने चाहिए इस संदर्भ में भी यशवंतराव जी ने अपने विचार व्यक्त किए है। नाट्य परिषद ने नाट्य सम्मेलन लेने के साथ–साथ रंगमंच से जुड़े नाट्य व्यवसाय मंडलियों को आपत्कालीन मदद करने के लिए निधि इकट्ठा करना चाहिए और इन उपक्रमों में मराठी दर्शक और पाठकों ने भी मदद करनी चाहिए इसतरह की भूमिका वे व्यक्त करते हैं। यशवंतराव जी ने नाट्य परिषद के अनेक पुरस्कारों की योजना, नाट्य प्रशिक्षण योजना, नाट्य विषयक ग्रंथ प्रकाशित करने की योजना तथा स्टेज फाइनान्स कार्पोरेशन जैसे संगठन की स्थापना करने की योजना आदि की प्रशंसा करते हैं। इसतरह यशवंतराव चव्हाण जी के मराठी नाटक, रंगमंच, कलाकार, नाट्य व्यवहार आदि के बारे में उनके विचारों का अध्ययन करने के पश्चात् उनकी नाट्य विषयक भूमिका और उनका नाट्य विषयक दृष्टिकोण स्पष्ट रूप से दिखाई देता है।

संदर्भ ग्रंथ :

1. यशवंतराव चव्हाण, ऋणानुबंध, प्रेस्टीज प्रकाशन, पुणे, 1984
2. डॉ. प्रकाश दुकडे, यशवंतराव चव्हाण : माणूस आणि लेखक, ग्रंथाली प्रकाशन, मुंबई, 12 मार्च, 2012
3. यशवंतराव चव्हाण, कृष्णाकाठ, प्रेस्टीज प्रकाशन, पुणे, 1987
4. गुगल–'यशवंतराव चव्हाण' वेबसाइट पर मिली जानकारी
5. 'यशवंत कीर्तिवंत'–लोकराज्य विशेषांक, 12 मार्च, 2012, सूचना और जनसंपर्क संचालनालय, मुंबई
6. यशवंतराव चव्हाण, युगांतर, कॉन्टिनेन्टल प्रकाशन, पुणे, 7 में, 1970
7. यशवंतराव चव्हाण भूमिका, प्रेस्टीज पब्लिकेशन, पुणे, 15 दिसंबर, 1979